RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Refereed journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Approved by UGC

# ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

## संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

षष्ठ वर्ष, चतुर्थ अंक

सितम्बर-अक्टूबर 2017

₹ 30

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

भारतीय ज्योतिषम्

# विषय - सूची


| क्र. | विषय | लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|---|
| १ | भाषा के विकास हेतु प्रयोग विज्ञान की आवश्यकता | डॉ. परमेश कुमार शर्मा | 02 |
| २ | ज्योतिषीय गणना पर आधारित जन्म से पूर्व के संस्कार | डॉ. देश राज शर्मा | 04 |
| ३ | वैदिक संहिताओं में सूर्य एवं सौर ऊर्जा | डॉ. आचार्य बृहस्पति मिश्र | 08 |
| ४ | अष्टाध्यायी-लघुवृत्ति में अव्ययीभावसमास का व्याख्यान | डॉ.महीपाल सिंह | 11 |
| ५ | वाल्मीकिसम्भवम् में छन्द योजना: एक अध्यन | मीनाक्षि कुमारी आर्या | 13 |
| ६ | कालिकापुराणानुसार पूजनविधि विशेषत: देववस्त्र...... | डॉ. विवेकशर्मा | 17 |
| ७ | हिमाचल में ज्योतिष - सर्वेक्षण की आवश्यकता | तिलकराज | 20 |
| ८ | भारतीय वास्तुशास्त्र में जीर्णोद्धार की प्रासङ्गिकता | विजय कुमार | 22 |
| ९ | माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता ... | अजयब सिंह | 24 |
| १० | सोनीपत के माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीयता की भावना... | अजय कुमार | 32 |
| ११ | पूर्ववर्ती आचार्यों का अप्पयदीक्षित पर प्रभाव 'चित्रमीमांसा'.. | दुष्यन्त कुमार | 38 |
| १२ | ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से वाणिज्य में अर्घ का महत्त्व | मुक्तेश कुमार गौतम | 42 |
| १३ | वेद एवं इतिहास में लेखन परम्परा में विदुषियाँ | रूपा गौर ( चन्द्रोल ) | 44 |
| १४ | श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषदों में निष्काम कर्मयोग | राघवेन्द्र सिंह भदौरिया | 46 |
| १५ | संस्कृत-शब्द चिन्तन | डॉ. आचार्यबृहस्पतिमिश्र | 50 |
| १६ | आधुनिक उपन्यास और स्त्री जीवन के नए संदर्भ | पूर्णिमा चौधरी | 52 |


## पुनरीक्षण समिति


**प्रो. विद्यानन्द झा**
प्राचार्यचर - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

**प्रो. क्षेत्रवासी पण्डा**
अध्यक्ष - तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

**प्रो. भारतभूषण मिश्र**
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुम्बई परिसर, मुम्बई

**प्रो. हंसधर झा**
अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

**डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी**
वरिष्ठसहायकार्य
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

ISSN 2278 - 0327

# संस्कृत-शब्द चिन्तन

डॉ. आचार्य बृहस्पति मिश्र

किसी भी शब्द को तात्त्विक दृष्टि से देखने पर उसके दो स्वरूप व्यक्त होते हैं प्रथम शरीरतत्त्व और दूसरा आत्मतत्त्व।[1] प्राचीन संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से जो परश्रवणगोचर अर्थात् दूसरे के कर्ण द्वारा सुनी जाने वाली ध्वनि है वह शरीरतत्त्व अथवा व्यञ्जक तत्त्व है दूसरा शब्द के माध्यम से अर्थ का बोध वह आत्मतत्त्व अथवा व्यङ्ग्य या स्फोट है।[2]

प्रकृत विषय में संस्कृत शब्द में प्रथम शरीरतत्त्व की दृष्टि से सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से पाणिनीय व्याकरणानुसार क्त प्रत्यय[3] और सम् उपसर्ग और कृ धातु[4] के मध्य सुट् आगम[5] जो कि संस्कृत शब्द की भूषणात्मक[6] तथा उत्कर्षात्मक[7] अभिव्यक्ति को स्पष्ट करता है अर्थात् संस्कृत शब्द का अर्थ हुआ कोई ऐसी वस्तु जो अन्य की अपेक्षा से ज्यादा अच्छी हो।

इसी अर्थ में पाणिनीय अष्टाध्यायी में दही से किसी खाद्य पदार्थ सब्जी आदि में गुणात्मक उत्कर्ष किये जाने पर[8] उस व्यञ्जन को ''संस्कृतम्''[9] सूत्र से 'दाधिकम्[10](शाकम्)' ऐसे प्रयोग की ओर ध्यान दिलाया है। संस्कृत शब्द का इसी अर्थ में समान धर्मी एक शब्द और है-परिष्कृत[11] यह शब्द हिन्दी भाषा में जिस अर्थ आजकल प्रयुक्त हो रहा है। पूर्वकाल में संस्कृत साहित्य में संस्कृत शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। परिष्कृत शब्द तो आज भी संस्कृत भाषा और हिन्दी भाषा में समान अर्थ में ही प्रयुक्त हो रहा है। यह परिष्कृत अर्थ वाला संस्कृत शब्द आजकल विश्व की सबसे पुरातन आज भी बोले जाने वाली भारतीय भाषा के लिए प्रयुक्त होने लगा है[12] जिस भाषा में वेद, उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, वेदांग, दर्शन, पुराण, रामायण, महाभारत आदि मूल रूप में प्राप्त होते हैं।

पाणिनिकाल में यह भाषा पूर्णरूप में व्यवहार में थी। इसलिए महामुनि पाणिनि इस भाषा के लिए भाषा शब्द का ही प्रयोग करते हैं।[13] वे इस भाषा के दो प्रारम्भिक भेद दर्शाते हैं - लौकिक भाषा और वैदिक भाषा।[14] उनके व्याकरणग्रन्थ निर्माण का उद्देश्य - लघुतम प्रकार[15] से भाषा का शिष्ट व्यवहार जन्य साधुत्व दर्शाना है।[16] अन्य कुछ भौगोलिक भेद भी संस्कृत भाषा के लिए प्रयोग किये है- प्राच्य, औचित्य[17] आदि।

यह संस्कृत शब्द आज कल भाषा के लिए रूढ़ि हो गया है। किन्तु व्याकरण की आचार्य परम्परा आचार्य पाणिनि, आचार्य कात्यायन, आचार्य पतञ्जलि आदि के समय तो संस्कृत शब्द भाषा के लिए रूढ़ नहीं था। यह भाषा के लिए कब रूढ़ हो गया इसका बहुत स्पष्ट प्रमाण नहीं प्राप्त होता है।

वैसे भी भाषा विज्ञान की दृष्टि से कोई भी शब्द रूढ़ होता हुआ अर्थ संकोच को प्राप्त करता है[18] किन्तु प्रक्रिया कभी भी स्पष्ट नहीं की जा सकती है। फिर भी अर्थसंकोच के कारणों को खोजने का प्रयास अवश्य ही भाषा वैज्ञानिक करते हैं। किन्तु वे ऊहामात्र होते हैं। कभी-कभी सटीक होते हैं और कभी दूर-दूर तक विचारों के घोड़े दौड़ाने पर भी यथातथ्य स्पष्ट नहीं हो पाता है। ऐसा ही शब्द संस्कृत है। प्रथम -प्राच्य विधा से चिन्तन सरणी का प्रसार करने वाले सोचते हैं कि पूर्वकाल इस वाङ्मय का भाषित भाषा रूप में प्रचलन था। इसलिए पाणिनि काल में भाषा शब्द से इसी का बोध होता था। पतञ्जलि काल में अपशब्द के रूप में बहुत सारे शब्द प्रचलन में आ गये थे जैसे-गौ शब्द के लिए गावी, गोणी, गोता, गोपो, लालिका आदि।[19] किन्तु अलग से भाषा के रूप में किसी शब्द का संकेत प्राप्त नहीं होता है।

आजकल हिन्दी में भी गौ शब्द शुद्ध संस्कृत से तत्सम रूप प्रयोग में आ रहा है तथा तद्भव रूप में गऊ, गैय्या, गो, गाय आदि शब्द प्रयोग में हैं। यहाँ पर एक तथ्य और ध्यातव्य है कि जो भाषा वैज्ञानिक हिन्दी को संस्कृत का रूप मानते हैं उनकी दृष्टि में हिन्दी में प्रयुक्त गौ शब्द संस्कृत का ही मूल रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। क्योंकि वे हिन्दी को संस्कृत की साक्षात् पुत्री मानते है।[20] वैसे तो निर्विवाद रूप से सभी भारतीय भाषाओं में अस्सी से साठ प्रतिशत तक संस्कृत भाषा के मूल शब्द माने जाते हैं।[21] किन्तु उन भाषाओं में एक अपना शब्दों का भाषागत ढाँचा है। जिसमें वे संस्कृत के मूल को समाहित करते हैं। किन्तु हिन्दी भाषा का अपना शब्दों का भाषागत ढाँचा नहीं है।

भाषा-वैज्ञानिकों की दृष्टि में हिन्दी भाषा असंश्लिष्ट अथवा वियोगात्मक (analytic language)भाषा की श्रेणी में आती है।[22] क्योंकि इसमें विभक्तियाँ शब्द से बाहर रहती हैं जैसे-ने, को, के द्वारा, के, लिए, से, का, के की, रा, रे, री, में, पर, ऊपर आदि सातों विभक्तियाँ किसी भी शब्द के रूप को किंचित्-मात्र भी परिवर्तित नहीं करती हैं। ये विभक्तियाँ किसी भी शब्द के बाहर रहती हुई उसके साथ होकर विभक्ति के अर्थ को जोड़ते हुए वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करती हैं जैसे-

राम सीता और लक्ष्मण के साथ अपने पिता दशरथ की वचन बद्धता से विवश होकर दी गई आज्ञा के कारण से चौदह वर्ष के